अनंदु साहिब

अनंदु साहिब

रामकली महला ३ अनंदु

ੴ१ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ।। सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ।। राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ।। सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ।। कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ।।१।।

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले।। हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा।। अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा।। सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे।। कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले।।२।।

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै।। घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए।। सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए।। नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे।। कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै।।३।।

साचा नामु मेरा आधारो।। साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ।। करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ।। सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ।। कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो।। साचा नामु मेरा आधारो।।४।।

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै।। घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ।। पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ।। धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे।। कहै नानक तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे।।५।।

साची लिवै बिनु देह निमाणी।। देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ।। तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ।। एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ।। कहै नानक लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ।।६।।

आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ।। जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ।। करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ।। अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ।। कहै नानक एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ।।७।।

बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै।। पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ।। इकि भरम भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ।। गुरपरसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए।। कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए।।८।।

आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी।। करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ।। तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ।। हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी।। कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी।।९।।

ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ।। चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ।। एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ।। माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ।। कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ।। कहै नानकु मन चंचल चतुराई

किनै न पाइआ।।१०।।

ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले।। एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले।। साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ।। ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ।। सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले।। कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले।।११।।

अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ।। अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे।। जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए।। आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ।। कहै नानकु तू सदा अगंमु है तेरा अंतु न पाइआ।।१२।।

सुरि नर मुनि जन अंम्रितु खोजदे सु अंम्रितु गुर ते पाइआ।। पाइआ अंम्रितु गुरि क्रिपा कीनी सचा मनि वसाइआ।। जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ।। लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ।। कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अंम्रितु गुर ते पाइआ।।१३।।

भगता की चाल निराली।। चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा।। लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा।। खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा।। गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी।। कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली।।१४।।

जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे।। जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे।। करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे।। जिसनो कथा सुणाइहि आपणी सि गुर दुआरै सुखु पावहे।। कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे।।१५।।

एहु सोहिला सबदु सुहावा।। सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ।। एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ।। इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ।। कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ।।१६।।

पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ।। हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ।। पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ।। कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ।। कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ।।१७।।

करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ।। नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए।। सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए।। मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ।। कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ।।१८।।

जीअहु मैले बाहरहु निरमल।। बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ।। एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ।। वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ।। कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ।।१९।।

जीअहु निरमल बाहरहु निरमल।। बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी

कमाणी।। कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी।। जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे।। कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले।।२०।।

जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै।। होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले।। गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले।। आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए।। कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए।।२१।।

जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै।। पावै मुकति न होरथै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए।। अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए।। फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए।। कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए।।२२।।

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी।। बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी।। जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी।। पीवहु अंम्रितु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी।। कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी।।२३।।

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी।। बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी।। कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी।। हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी।। चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी।। कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी।।२४।।

गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ।। सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ।। सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ।। आपे हीरा रतनु आपे जिसनो देइ बुझाइ।। कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ।।२५।।

सिव सकति आपि उपाइकै करता आपे हुकमु वरताए।। हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए।। तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए।। गुरमुखि जिसनो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए।। कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए।।२६।।

सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी।। ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी।। तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी।। गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंम्रित बाणी।। कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी।।२७।।

माता के उदर महि प्रितपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ।। मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए।। ओसनो किहु पोहि न सकी जिसनउ आपणी लिव लावए।। आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ।। कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ।।२८।।

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ।। माइआ अगनि सभि इको जेही करतै खेलु रचाइआ।। जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ।। लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ।। एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ।। कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ।।२९।।

हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ।। मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक

विललाइ।। ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिसनो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ।। जिसदा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ।। हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ।।३०।।

हरि रासि मेरी मनु वणजारा।। हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी।। हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी।। एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा।। कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा।।३१।।

ए रसना तू अनरसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ।। पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ।। हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ।। एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ।। कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ।।३२।।

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ।। हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ।। हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ।। गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ।। कहै नानकु स्त्रिसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ।।३३।।

मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ।। हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ।। हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए।। गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए।। अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो।। कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो।।३४।।

ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइकै किआ तुधु करम कमाइआ।। कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ।। जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ।। गुरपरसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ।। कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ।।३५।।

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई।। हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ।। एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ।। गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई।। कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रिसटि होई।।३६।।

ए स्त्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए।। साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी।। जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी।। सचु अलख विडाणी ताकी गति कही न जाए।। कहै नानकु अंम्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए।।३७।।

हरि जीउ गुफा अंदरि रखिकै वाजा पवणु वजाइआ।। वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ।। गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ।। तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ।। कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखिकै वाजा पवणु वजाइआ।।३८।।

एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु।। गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु

धिआवहे।। सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे।। एहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे।। कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे।।३९।।

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे।। पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे।। दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी।। संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी।। सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे।। बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे।।४०।।१।।

((((((((((((((--------))))))))))))))